Dr. Dinesh Prasad Kamal
Professor,
Ancient Indian History and Archaeology
Patna University
Mob:9431047888

Email: dineshkamal78@gmail.com

Sources for the study of economic history of Ancient India

- भारतीय भारतीय लोगों के आर्थिक जीवन की विशेषता थी : कृषि, उद्योग और व्यापार सर्वांगीण विकास।
- भी निजी क्षेत्र, राजकीय क्षेत्र दोनों ने ही लोगों की आर्थिक समृद्धि और राष्ट्रीय धन की वृद्धि में योग दिया था।
- व्यापारियों और व्यवसायियों में राष्ट्रीय चेतना की अनुभूति थी, वे सदैव निर्यात को बढ़ान और अपने विदेशी ग्राहकों से व्यापार का अनुकूल संतुलन बनाए रखने के लिए उत्सुक रहे।
- सामूहिक उद्यम, न्यायोचित वितरण, कृषि संबंधी उपक्रमों तथा व्यावसायिक उद्यमों के द्वारा एक प्रकार की सामाजिक व्यवस्था उदगम हुआ

प्र Peur,

- अपने हितों की रक्षा, अनुचित प्रतियोगिता से बचने के लिए पेशों का श्रेणियों (गिल्ड) को संगठन सामने आया।
- श्रेणी एसी व्यवस्था संस्था थी, जिसका प्राचीन इतिहास में लंबा इतिहास रहा था, जो पश्चिम में केवल मध्य युग में आकर विकसित हुई।

III,

- कृषि के द्वारा भूमि का विकास हुआ, अर्थात भू-स्वामित्व का प्रचलन आया।
- (i) राजा की भूमि पर राजा का स्वामित्व
(ii) व्यक्तिगत भूमि स्वामित्व
(iii) भूमि पर सामूहिक स्वामित्व

IV कृषि विकास के उपाय, जल के पर्याप्त प्रबंध के लिए सिंचाई, नहरों का निर्माण का व्यक्तिगत है,
उदाहरण — रुद्रदामन (130-150) जूनागढ़ वाले अभिलेख से सुदर्शन जलाशय का लगभग आठ शताब्दियों लंबा इतिहास दिया गया है।

(v) श्रमिक वर्ग :-
- पेशों को संगठित करने के लिए मजदूर संघों का

(vi) व्यापारिक साम्राज्य :-
- पश्चिमी रोम से, मध्य एशिया, चीन से, दक्षिण-पूर्व एशिया

(vii) इस प्रकार भारतीय प्राचीन अर्थव्यवस्था अपनी सभी पक्षों — भूमि तथा कृषि व्यवस्था, व्यापार तथा वाणिज्य, पेशों और श्रेणियों, श्रम और मजदूरी, साहूकार, ब्याज, एक सुव्यवस्थित मुद्रा प्रणाली